कार्य पत्र - 6

कक्षा :7 विषय: हिंदी

दिनांक-21.04.20 अनुक्रमांक

अध्यापिका: रेखा ठाकुर

चित्र कथा लेखन

चित्र को देखकर अपनी कल्पना के अनुसार कहानी लिखना ही चित्र कथा लेखन है। इसके द्वारा छात्र की कल्पनाशीलता का विकास होता है भाषा में

सुधार आता है तथा लेखन कला का अभ्यास होता है।

निर्देश:-

१) प्रथम 2 कहानियां केवल पठन हेतु है उनका प्रयोग उदाहरण समझने के लिए ही कीजिए।

२) कार्य पत्र में दो चित्र दिए जा रहे हैं प्रथम चित्र को देखकर कहानी लेखन कक्षा समय में ही कीजिए तथा दूसरे चित्र का कहानी लेखन गृह कार्य में किया जाएगा।

३) कहानी लिखने के उपरांत उसे ध्यानपूर्वक पढ़िए तथा उसमें की गई गलतियों को सुधार कर अध्यापिका को दिखाइए।

४) निर्देशों को ध्यानपूर्वक पढ़िए तथा कार्य संबंधित प्रश्न अध्यापिका से पूछिए।

५) कहानी लेखन कार्य लंबा होने के कारण अध्यापिका उसे निर्धारित समय पर पूर्णता पढ़ नहीं पाएगी इसलिए आप अपनी कहानी जमा कर देंगे अध्यापिका उसे अपनी सुविधा के अनुसार पढ़कर यथोचित उत्तर दे देगी।

उदाहरण:-

बचाव की तैयारी

रानू के स्कूल में पेंटिंग की प्रदर्शनी लगाई गई थी. एक चित्र पर रानू की नजर ठहर गई. उसकी आंखें डबडबा आईं. शिक्षक की नजर जब रानू पर पड़ी तो वे तुरंत रानू के पास आकर प्यार से बोले – "क्या हुआ रानू बेटे इस पेंटिंग को देख कर तुम उदास क्यों हो गईं ? तुम्हारी आंखें क्यों भर आयीं ?" रानू बोली – "सर, मुझे मेरे गांव की याद आ गई.

पिछली बरसात मे मेरा गांव बाढ़ के पानी में डूब गया था. मेरी प्यारी सी गाय गुनगुन भी उस बाढ़ में समा गई. हमारे खेती हुआ करती थी. खेत के बीच में ही हमारी झोपड़ी थी. पास में ही मेरे चाचा की भी झोपड़ी थी. पूरे परिवार ने मिलकर अपने हाथों से घरौंदा तैयार किया था. तीन दिन की लगातार बारिश से नदी-नाले भर गए और सैलाब बनकर हमारे गांव में घुस आये. सब बहुत परेशान हो गए. मेरा भाई, जो मुझ से दो साल बड़ा है गांव के ही स्कूल में पढ़ता था. उसे कुछ दिन पहले स्कूल में बताया गया था कि बाढ़ से पहले क्या क्या तैयारी कर रखनी चाहिए. सब लोग मिलकर जरूरी कागज, दवाई, खाने का सामान आदि पैक करके बचाव दल की नाव के सहारे बाहर सुरक्षित निकाल आये. गांव के कुछ लोग मचान के ऊपर चढ़कर पानी कम होने का इंतजार करते रहे. दो दिन बाद बाढ़ का पानी निकलने के बाद जब गांव वापस गए तो वहां अपने स्कूल बैग, कॉपी -किताब को सुरक्षित देखकर मैं खुश हो गई, जिसे मां ने निकलने स पहले झोपड़ी की सबसे ऊपर वाली खूंटी में लटका दिया था."

बाढ़

सपना और कल्पना दोनों ही बहुत घनिष्ट मित्र थीं. दोनों पढ़ने के लिए अपने घर से दूर एक होस्टल में रहती थीं. सपना की रुचि समाज सेवा में थी. वह निर्धन तथा बेसहारा बच्चों को खुले मैदान में बैठाकर पढ़ाती थी. कल्पना एक चित्रकार थी. वह एक अमीर पिता की इकलौती बेटी थी और आगे की पढ़ाई के लिए विदेश जाने वाली थी.

उन्हीं दिनों बहुत तेज़ बारिश के कारण बाढ़ के हालात पैदा हो गए. लगातार तीन दिनों तक वर्षा होती रही. बाढ़ पीड़ितों की दशा बिगड़ती जा रही थी. बहुत से गांव बाढ़ के चपेट में थे. लोग बाढ़ से बचने के लिए घरों की छतों पर चढ़ गये. बहुत लोग सुरक्षित जगह की तलाश में नाव से या पैदल अपने बच्चों को कंधे पर उठाकर ज़रुरी सामान के साथ जा रहे थे. सपना बाढ़ पीड़ितों की सहायता में लगी थी. पंद्रह दिन बाद होस्टल लौटने सपना ने कल्पना को बताया कि उसने किस प्रकार बाढ़ पीड़ितों की मदद की थी. कल्पना ने बाढ़ पीड़ित परिवारों का एक चित्र बनाया जिसे देश विदेश में बड़ी ख्याति मिली. कई वर्ष बाद

कल्पना से सपना की मुलाकात हुई. सपना के साथ दो बच्चे भी थे. सपना ने उसी तस्वीर पर बने दोनों बच्चों की ओर इशारा करते हुए बताया कि ये वही दोनों बाढ़ पीड़ित बच्चे हैं जिनके मां बाप बाढ़ में खो गए थे. बाद में सपना ने उन्हें गोद ले लिया था. कल्पना की आँखें विस्मय से फैली रह गयीं.

दोनों कहानियां एक ही चित्र को देखकर लिखी गई है तथा यह उदाहरण है कि एक चित्र को देखकर अलग-अलग व्यक्तियों के मन में अलग-अलग कहानियां आती हैं।

निम्न चित्रों को देखकर अपनी कल्पना अनुसार कहानी बनाइए:-

प्रथम चित्र कक्षा कार्य में कीजिए।

दूसरे चित्र को गृहकार्य में कीजिए-